बुद्धि का उपयोग सद्कार्यों में करें

– युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर, 8 अप्रैल।

''वाणी संयम और वाणी विवेक का मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्त्व है। जो अपनी अपनी जाती अथवा अपने आप में श्रेष्ठ होता है उसे रत्न कहा जाता है। सुभाषित सत्य, मधुर भाषा रत्न के समान होती है।''

उक्त विचार युवाचार्य प्रवर ने तेरापंथ भवन के प्रांगण में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाये।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया मनुष्य के हाथ का आभुषण दान होता है। जो व्यक्ति दानशील होता है वह प्रभावित भी होता है। सिर का आभुषण होता है नमन करना, गुरु चरणों में सिस झुकाना है।

मुंह का आभुषण सत्य वाणी को बताते हुए युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि व्यक्ति के मुंह का आभुषण है सत्य व सही बात कहना है। जो व्यक्ति बार–बार झूठ बोलता है तो मुंह का भी दुरुपयोग हो जाता है। इसी तरह व्यक्ति के कान का आभुषण है ज्ञान की बातों को सुनना। हृदय का आभुषण है हृदय को स्वच्छ, साफ रखना, मन में कपट, झूठ न हो। जिस आदमी का हृदय निर्मल होता है तो उसकी चेतना भी निर्मल होती है।

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने शौर्य को भुजाओं का आभुषण बताते हुए फरमाया कि व्यक्ति में शौर्य का होना, ताकत होना भुजाओं का आभुषण है। व्यक्ति को अपने शौर्य का शक्ति का उपयोग सेवा के कार्यों में करना चाहिए। मनुष्य में यह विवेक जागे कि कि अपनी शक्ति का सही जगत उपयोग करे। सकता है दुरुप्योग भी किया जा सकता है। यदि एक सज्जन आदमी के पास अगर धन है तो वह उसका विसर्जन करेगा, सही कार्यों में धन का नियोजन करेगा और यदि दुर्जन के पास धन है तो वह उसके लिए अहंकार का पोषण करने वाला हो जाएगा। इसी तरह ज्ञानी आदमी के पास ज्ञान होता है तो ज्ञान को बढ़ाएगा और एक दुर्जन के पास बुद्धि है तो वह विवाद को बढ़ाने वाला भी हो सकता है। सज्जन व्यक्ति बुद्धि का उपयोग समस्या का समाधान करने में व अच्छे कार्यों में करता है।

युवाचार्यश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु आचार्य भिक्षु का विश्लेषण करते हुए फरमाया कि जब स्वामी भिक्षुजी ने कहा गया कि आपके पास बहुत बुद्धि है कि आप तो पूरे राज्य का संचालन कर सकते है, उसके प्रत्युतर में आचार्य भिक्षु ने कहा था कि वह बुद्धि किस काम की जो कर्म को बांधती है अर्थात बुद्धि का उपयोग सेवा धर्म में लगाएं तो पापकर्मों का बंध नहीं होगा और समाज व धर्म की सेवा में लगाना चाहिए।

आंचलिक सामंजस्य कार्यशाला का आयोजन

बीदासर 8 अप्रैल।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्त्वावधान में स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के मार्गदर्शन में दो दिवसीय आंचलिक सामंजस्य का शुभारम्भ हुआ।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के मंगल आशीर्वाद के साथ प्रारंभ हुई इस कार्यशाला में 16 शहरों से 200 से भी ज्यादा कन्याओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने फरमाया कि जब तक व्यक्ति अकेला होता है तब तक सामंजस्य की बात जरूरी नहीं होती। एक से ज्यादा होने पर सामंजस्य जरूरी है। परिवार में अनेक लोग होते हैं। सबकी अलग–अलग रूचि होती है। उनको एक साथ पूरा नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में सामंजस्य पूर्वक सबकी भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रत्येक दिन एक व्यक्ति की इच्छा पूरी की जा सकती है। उन्होंने कहा कि कन्याओं को इस ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उनके सामने संभावित पूरा भविष्य है। कन्याओं को पितृ पक्ष और ससुराल पक्ष हो घरों में सामंजस्य के साथ रहना होता है। जब कन्याएं सामंजस्य की कला सीख लेती है तो वह स्वयं शांति से रह सकती है और परिवार को अच्छा बना सकते हैं।

प्रवास व्यवस्था समिति बीदासर द्वारा प्रायोजित इस कार्यशाला के अलग–अलग सत्रों में साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, साध्वीश्री कल्पलता के विशेष वक्तव्य हुए। डॉ. हिमांशु शर्मा ने सामंजस्य पर विशेष प्रशिक्षण दिया। अखिल भारतीय महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सौभागदेवी बैद ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने संचाल किया। स्थानीय कन्या मण्डल ने मंगलाचरण किया।

महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने बताया कि आज 'बेटी परिवार की शान और सम्मान कैसे बने' विषय आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण का विशेष संबोधन प्राप्त होगा।

प्रेक्षाध्यान शिविर 11 अप्रैल से

बांठिया भवन प्रांगण में आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान आवासीय शिविर 11 अप्रैल से 18 अप्रैल, 2009 तक आयोजित होगा। शिविर की जानकारी देते हुए प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान प्रभारी कमलसिंह दूगड़ ने कहा कि इस शिविर हेतु पंजीकरण भी चालू कर दिया गया है।

शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक शांति के लिए प्रतिदिन यौगिक क्रियाएं

बीदासर, 8 अप्रैल।

तेरापंथ युवक परिषद के सभागार में प्रतिदिन प्रातः 6.45 से 7.30 बजे तक प्रेक्षाध्यान एवं यौगिक क्रियाओं का प्रयोग समण सिद्धप्रज्ञ के निर्देशन में निःशुल्क चल रहा है। प्रेक्षाध्यान प्रभारी कमलसिंह दूगड़ ने बताया कि शिविर में प्रतिदिन काफी संख्या में लोग यौगिक क्रियाएं, आसन प्राणायम का लाभ ले रहे हैं। कस्बे व बाहर से आये लोग ले रहे हैं।

बैंगानी बंधुओं को संघसेवा पुरस्कार

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित एक समारोह में प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी ने जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाला संघ सेवा पुरस्कार इस वर्ष झूमरमल बैंगानी एवं जंवरीमल बैंगानी को संयुक्त रूप से देने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि यह पुरस्कार संघ की विशिष्ट सेवाएं देने वाले व्यक्तियों को श्रीमती पानादेवी सेखानी की स्मृति में श्री नेमचन्द जेसराज सेखनी चेरीटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि बैंगानी बंधुओं का तेरापंथ समाज की अनेक गतिविधियों में श्रम नियोजित हुआ है।